राष्ट्रकूट

राष्ट्रकूट कौन थे?

- राष्ट्रकूट साम्राज्य ने 10वीं शताब्दी के अंत तक लगभग 200 वर्षों तक दक्कन पर प्रभुत्व जमाया और विभिन्न समयों पर उत्तर और दक्षिण भारत के क्षेत्रों पर भी नियंत्रण किया।
- यह न केवल उस समय की सबसे शक्तिशाली राजनीतिक सत्ता थी बल्कि आर्थिक और सांस्कृतिक मामलों में उत्तर और दक्षिण भारत के बीच एक सेतु के रूप में भी कार्य करती थी।
- इसने दक्षिण भारत में उत्तर भारतीय परंपराओं और नीतियों को बढ़ावा और विस्तार दिया।
- गौरतलब है कि भारत ने राजनीति, अर्थव्यवस्था, संस्कृति, शिक्षा और धर्म के क्षेत्र में स्थिरता और उपलब्धियों की नई ऊंचाइयों को छुआ।
- उत्तरी भारत में ऐसी कोई शक्ति नहीं थी जो दक्कन के मामलों में हस्तक्षेप कर सके। इसने राष्ट्रकूटों के उद्भव के लिये एक अवसर प्रदान किया।

राष्ट्रकूटों की राजनीति क्या थी?

- प्रारंभिक मध्यकाल में भारत के विभिन्न हिस्सों में शासन करने वाले राष्ट्रकूटों की कई शाखाएँ थीं।
- राष्ट्रकूटों के सबसे पहले ज्ञात शासक परिवार की स्थापना मालखेड में मनंक द्वारा की गई थी, जिसमें पलिध्वज बैनर (ध्वज) और गरुड़-लंछना (पक्षी प्रतीक) थे।
- मध्य प्रदेश के बैतूल ज़िले में एक और राष्ट्रकूट परिवार का शासन था।
- 757 ईस्वी की गरुड़ मुहर वाले अंट्रोली-चारोली शिलालेख में चार पीढ़ियों का उल्लेख है: कर्क I, उनके बेटे ध्रुव, उनके बेटे गोविंद, और उनके बेटे कर्क II, गुजरात में लता देश में मालखेड कड़ी की एक संपार्श्विक शाखा से संबंधित हैं।
- लता (क्षेत्र) की पहचान उत्तर में माही नदी और दक्षिण में नर्मदा या तापी नदी के बीच के क्षेत्र के रूप में की जाती है। भरूच एक प्रमुख शहर और इस क्षेत्र की पूर्व राजधानी है।

राष्ट्रकूटों के प्रमुख शासक कौन थे?

दन्तिदुर्ग:

- दन्तिदुर्ग राष्ट्रकूट साम्राज्य के संस्थापक थे जिन्होंने अपनी राजधानी मान्यखेत या आधुनिक शोलापुर के पास मालखेड में तय की थी।
- वह कर्क द्वितीय का समकालीन प्रतीत होता है।
- दन्तिदुर्ग ने पल्लवों की राजधानी कांची पर हमला किया और नंदीवर्मन पल्लवमल्ल के साथ गठबंधन किया।
- दन्तिदुर्ग ने 753 ईस्वी में बृहत चालुक्य साम्राज्य के बाहरी क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया और फिर साम्राज्य के मध्य क्षेत्र पर हमला किया एवं कीर्तिवर्मन को आसानी से हरा दिया।
- 754 ईस्वी के समांगध शिलालेख में दर्ज है कि दन्तिदुर्ग ने बादामी के अंतिम चालुक्य शासक कीर्तिवर्मन II को उखाड़ फेंका और पूर्ण शाही पद ग्रहण किया और खुद को इस रूप में वर्णित किया:
  - पृथ्वीवल्लभ,
  - महाराजाधिराज,
  - परमेश्वर, व
  - परमभट्टारक।
- दन्तिदुर्ग ने अपने क्षेत्र का वर्णन चार लाख गाँवों के रूप में किया है, जिसमें संभवतः बादामी के चालुक्य साम्राज्य के आधे से अधिक हिस्से पर उनका शासन शामिल था।
- दन्तिदुर्ग निःसंतान मर गया, जिसके कारण उसके चाचा कृष्णराज प्रथम और परिवार के अन्य सदस्यों के बीच विवाद हो गया।

कृष्णराज प्रथम:

- कृष्णराज प्रथम अपनी लोकप्रियता के कारण 756 ईस्वी में सिंहासन पर कब्जा करने में सफल रहा।
- 772 ईस्वी के कृष्णराजा प्रथम के भंडक शिलालेख में उनके लिये शुभतुंगा (समृद्धि में उच्च) और अकालवर्षा (लगातार वर्षा करने वाला) शब्द का

प्रयोग कयिा गया था।
- उसके अधीन सभी दशिाओं में नव स्थापति राष्ट्रकूट साम्राज्य का वस्तिार हुआ।
- उसने बादामी के चालुक्यों को उखाड़ फेंकने के साथ शुरुआत की।
- 772 ईस्वी की भंडक प्लेटें बताती हैं कि पूरा मध्य प्रदेश उसके शासन में आ गया था।
- दक्षणिी कोंकण को भी जीत लयिा गया और कृष्णराज प्रथम ने उसे अपने अधीन कर लयिा।
- उसने गंगा राज्य पर आधपित्य स्थापति कर दक्षणि दशिा में अपने साम्राज्य का वस्तिार भी कयिा।
- इस प्रकार कृष्णराज प्रथम के अधीन राष्ट्रकूट साम्राज्य पूरे आधुनकि महाराष्ट्र राज्य, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश का एक बड़ा हस्सिा, वेंगी के साथ पूर्व में अपना वर्चस्व बनाने और मध्य प्रदेश के एक बड़े हस्सिे में वस्तिारति होने के लयि लयिा जाना जा सकता है।
- कृष्णराज I की मृत्यु 772 ईस्वी और 775 ईस्वी के बीच हुई और उसके बाद उनके बेटे गोवदिा II ने संहिासन पर कब्जा कयिा।

गोवदि द्वतिीय:

- गोवदि द्वतिीय (774-780 ईस्वी) प्रभुतावर्ष (वपिुल बारशि करने वाला) और वक्रिमावलोक (एक वीर दखिने वाला व्यक्ती) की उपाधि धारण करते हैं।
- कुछ लेखों में उनका नाम भुला दयिा गया या छोड़ दयिा गया है।
- ऐसा उनके और उनके छोटे भाई ध्रुव के बीच नासकि और खानदेश के राज्यपाल के रूप में शासन करने के लयि गृहयुद्ध के कारण हुआ।
- भाइयों के बीच पहला युद्ध गोवदिा द्वतिीय के लयि वनिाशकारी रूप से समाप्त हुआ।

ध्रुव:

- ध्रुव (780 - 793 CE) ने नम्नि उपाधि धारण की:
  - नरिुपमा (अप्रतमि)
  - काली-वल्लभ (युद्ध के शौकीन)
  - धारावर्षा (भारी वर्षा)
  - श्रीवल्लभ (भाग्यशाली)
- ध्रुव ने संहिासन हासलि करने के बाद गृहयुद्ध में गोवदिा द्वतिीय की सहायता करने वाले सभी राजाओं को कड़ी सजा दी।
- उन्होंने अपने जीवनकाल में अपने छोटे लेकनि योग्य पुत्र गोवदिा तृतीय को राजा बनाया।

गोवदिा III:

- गोवदिा III (793-814 8 ईस्वी) सबसे महान राष्ट्रकूट शासकों में से एक बने, जनिके पास उपाधयिाँ थीं:
  - जगततुंगा (दुनयिा में प्रमुख)
  - कीर्त्त-िनारायण (प्रसद्धिि के संबंध में वही नारायण)
  - जनवल्लभ (लोगों के पसंदीदा)
  - त्रभिुवनधवला (तीनों लोकों में शुद्ध)
  - प्रभुतावर्ष (प्रचुर मात्रा में वर्षा करने वाला)
  - श्रीवल्लभ
- उसने सबसे पहले दक्षणि में अपने बड़े भाइयों के वद्रिोहों को कुचला।
- उत्तर में, कन्नौज के नागभट्ट के खलिाफ एक सफल अभयिान और कोशल, कलगिं, वेंगी, दहला और ओड्रका के साथ मालवा के वलिय के बाद, गोवदिा III ने फरि से दक्षणि की ओर रुख कयिा।
- अपने पति की अपेक्षाओं से बेहतर प्रदर्शन करते हुए उन्होंने कूटनीति और युद्ध के मैदान दोनों में अपने कौशल के माध्यम से राष्ट्रकूट साम्राज्य की प्रसद्धिि हमिालय से लेकर केप कोमोरनि तक फैला दी।
- गोवदिा के उत्तराधकिारी उनके इकलौते पुत्र महाराजा सर्व बने जन्हिें अमोघवर्ष प्रथम के नाम से जाना जाता है।

अमोघवर्ष प्रथम:

- अमोघवर्ष I (814-878 ईस्वी) ने अपने पति की तरह खुद को राष्ट्रकूट राजाओं में सबसे महान साबति कयिा।
- उनके पास उपाधयिाँ थी:
  - नृपतुंगा (राजाओं में श्रेष्ठ)
  - अतशियधवला (आचरण में आश्चर्यजनक रूप से श्वेत)
  - महाराजा-शंदा (महान राजाओं में सर्वश्रेष्ठ)
  - वीरा-नारायण (वीर नारायण)
- वह वास्तव में समकालीन भारत की धार्मकि परंपराओं में रुचि रखते थे और अपना समय जैन भक्षिुओं और आध्यात्मकि ध्यान के अन्य रूपों की संगति में व्यतीत करते थे।
- उनके शलिालेखों में उन्हें जैन धर्म के सबसे प्रमुख अनुयायियों में गनिा जाता है।
- वे न केवल स्वयं लेखक थे बल्कि लेखकों के संरक्षक भी थे।
- आदपिुराण के लेखक, जनिसेना, अमोघवर्ष प्रथम के जैन आचार्यों में से थे।
- उन्होंने न केवल जैन धर्म बल्कि ब्राह्मणवादी धर्म का भी प्रचार कयिा और अपनी प्रजा के कल्याण के लयि कई अनुष्ठान भी कयिे।

- उनकी मृत्यु के बाद लगभग 879 ईस्वी में उनके पुत्र कृष्णा द्वितीय का राज्याभिषेक हुआ।

कृष्ण द्वितीय:

- कृष्ण द्वितीय (878-914 ईस्वी) के पास अकालवर्षा और शुभतुंगा की उपाधियाँ थीं।
- वह विद्रोहों को रोकने में पूरी तरह से सफल नहीं रहा।
- उनके शासनकाल की एकमात्र सफलता लता वायसरायल्टी की समाप्ति थी।
- वेंगी और चोलों के खिलाफ किये गए युद्धों में उन्हें कुछ समय के लिये आपदा, अपमान और निर्वासन के अलावा कुछ नहीं मिला।

इंद्र तृतीय:

- इंद्र तृतीय 915 ईस्वी में राजा बने। इंद्र III की उपाधियाँ थीं:
  - नित्यवर्ष (लगातार बरसने वाला)
  - रत्तकंदरापा
  - कीर्ति-नारायण
  - राजमरथंडा
- अमोघवर्ष प्रथम के पौत्र इंद्र तृतीय ने साम्राज्य की पुनः स्थापना की।
- लता और मलावा के माध्यम से कालपी और कन्नौज तक राष्ट्रकूट सेना की उन्नति और महिपाल की गद्दी, निस्संदेह, इंद्र की महत्वपूर्ण सैन्य उपलब्धियाँ थीं।
- 915 ईस्वी में महिपाल की हार और कन्नौज की लूट के बाद, इंद्र III अपने समय का सबसे शक्तिशाली शासक था।
- इंद्र III का शासन 927 ईस्वी के अंत तक समाप्त होता है।
- उसके बाद उसका पुत्र अमोघवर्ष द्वितीय सिंहासन पर बैठा और सलिहारा अपराजिता (997 ईस्वी) के भंडाना अनुदान के अनुसार एक वर्ष के लिये शासन किया।

कृष्ण तृतीय:

- कृष्ण तृतीय योग्य शासकों की कड़ी में अंतिम थे।
- कृष्णा III ने चोल राजा परांतक I (949 CE) को हराया, चोल साम्राज्य के उत्तरी भाग पर कब्ज़ा कर लिया और चोल साम्राज्य को अपने सेवकों के बीच वितरित कर दिया।
- इसके बाद उन्होंने रामेश्वरम पर दबाव डाला और वहां एक विजय स्तंभ स्थापित किया और एक मंदिर बनाया।
- उनकी मृत्यु के बाद 966 CE के अंत में या 967 CE के बहुत पहले उनके विरोधियों ने उनके उत्तराधिकारी सौतेले भाई खोटिग के खिलाफ एकजुट हो गए। राष्ट्रकूट की राजधानी मान्यखेत को 972 ईस्वी में परमार राजाओं द्वारा लूटा और जला दिया गया था और सम्राट को मान्यखेत छोड़ने के लिये मजबूर किया गया था।

राष्ट्रकूट का प्रशासन किस प्रकार का था?

- राष्ट्रकूटों के योद्धा राजाओं ने दक्षिण भारत में एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया जो भारत के उत्तरी भागों को छू रहा था जिसमें लगभग साढ़े सात लाख गाँव शामिल थे।
- राष्ट्रकूटों ने न केवल जीतकर एक विशाल राज्य बनाया बल्कि इसे अच्छी तरह से बनाए रखा।

सम्राट और सामंत आधारित प्रशासन:

- एक शक्तिशाली राजतंत्र साम्राज्य का मूल था, जिसे बड़ी संख्या में सामंतों द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी।
- दिलचस्प बात यह है कि प्रत्येक राष्ट्रकूट राजा के शासन की परिपक्वता के साथ यह क्षेत्र अधिक से अधिक सामंती होता जा रहा था।
- क्षेत्रों में प्रशासन की प्रणाली गुप्त साम्राज्य और उत्तर में हर्ष के राज्य और दक्कन में चालुक्यों के विचारों और प्रथाओं पर आधारित थी।
- पूर्व की तरह सम्राट प्रशासन के प्रमुख और सशस्त्र बलों के कमांडर-इन-चीफ सहित सभी शक्तियों का स्रोत था।

कानून एवं व्यवस्था:

- राजा राज्य के भीतर कानून और व्यवस्था के रखरखाव के लिये ज़िम्मेदार था और अपने परिवार, मंत्रियों, जागीरदारों, सामंतों, अधिकारियों और चैंबरलेन से पूर्ण वफादारी और आज्ञाकारिता की अपेक्षा करता था।

वंशानुगत उत्तराधिकार की प्रणाली:

- राजा की स्थिति आमतौर पर वंशानुगत होती थी, लेकिन उत्तराधिकार के नियम कठोर रूप से निश्चित नहीं थे।
- ज्येष्ठ पुत्र प्राय: राज्य प्राप्त करने में सफल होता था लेकिन ऐसे कई उदाहरण थे जब ज्येष्ठ पुत्र को अपने छोटे भाइयों से युद्ध करना पड़ा और

कभी-कभी वह उनसे हार भी गया।

- इस प्रकार राष्ट्रकूट शासक ध्रुव और गोविंद चतुर्थ ने अपने बड़े भाइयों को अपदस्थ कर दिया।
- राजाओं को आमतौर पर प्रमुख परिवारों से उनके द्वारा चुने गए कई वंशानुगत मंत्रियों द्वारा सलाह और सहायता दी जाती थी।

महत्वपूर्ण प्रशासनिक पद:

- पुरालेख और साहित्यिक अभिलेखों से ऐसा प्रतीत होता है कि लगभग हर राज्य में एक मुख्यमंत्री, एक विदेश मंत्री, एक राजस्व मंत्री और कोषाध्यक्ष, सशस्त्र बलों के प्रमुख, मुख्य न्यायाधीश और पुरोहित होते थे।

प्रशासनिक क्षेत्र का विभाजन:

- राष्ट्रकूट साम्राज्य में सीधे प्रशासित क्षेत्रों को विभाजित किया गया था:
    - राष्ट्र (प्रांत)
    - विषय
    - भुक्ति

विभाजित क्षेत्र का प्रशासन:

- विषय विषयपति के अधीन एक आधुनिक ज़िले की तरह था और भुक्ति उससे छोटी इकाई थी।
- राष्ट्रकूट प्रशासन में प्रांतीय गवर्नरों और ज़िला स्तर के गवर्नरों को क्रमश: राष्ट्रमहत्तर और विषयमहत्तर नामक सहायकों का एक निकाय सहायता प्रदान करता था।
- इन छोटी इकाइयों और उनके प्रशासकों की भूमिकाएँ और शक्तियाँ स्पष्ट नहीं हैं।
- ऐसा लगता है कि उनका प्राथमिक उद्देश्य भू-राजस्व की वसूली और कानून व्यवस्था पर थोड़ा-बहुत ध्यान देना था।
- ऐसा प्रतीत होता है कि सभी अधिकारियों को लगान-मुक्त भूमि का अनुदान देकर भुगतान किया जाता था।
- ग्राम प्रशासन की मूल इकाई थी। गाँव का प्रशासन ग्राम प्रधान और ग्राम लेखाकार द्वारा चलाया जाता था, जिनके पद आमतौर पर वंशानुगत होते थे।
- उन्हें लगान मुक्त भूमि का अनुदान दिया जाता था।
- ग्राम-महाजन या ग्राम-महत्तरा कहे जाने वाले गाँव के बुजुर्ग द्वारा मुखिया को अक्सर अपने कर्तव्यों निभाने में मदद की जाती थी।
- राष्ट्रकूट साम्राज्य में, विशेष रूप से कर्नाटक में, स्थानीय स्कूलों, तालाबों, मंदिरों और सड़कों के प्रबंधन के लिये ग्राम समितियाँ थीं जो मुखिया के साथ घनिष्ठ रूप से सहयोग करती थीं और राजस्व संग्रह का एक विशेष प्रतिशत प्राप्त करती थीं।
- नगरों में भी ऐसी ही समितियाँ होती थीं, जिनमें व्यापारिक संघों के प्रमुख भी जुड़े होते थे।
- शहरों और उनके आसपास के क्षेत्रों में कानून और व्यवस्था कोष्ट-पाल या कोतवाल की ज़िम्मेदारी थी।
- कमज़ोर प्रधानता और बढ़े हुए वंशानुगत तत्वों ने ग्राम समितियों की शक्ति को क्षीण कर दिया। केंद्रीय शासन के लिये भी उन पर अपना अधिकार जमाना और उन्हें नियंत्रित करना कठिन हो गया। तात्पर्य यह है कि सरकार सामंती होती जा रही थी।

राष्ट्रकूट की रक्षा पद्धति:

- अरब यात्रियों के इतिहास में वर्णित राष्ट्रकूट राजाओं के पास बड़ी और सुव्यवस्थित पैदल सेना, घुड़सवार सेना और बड़ी संख्या में युद्ध-हाथी थे।
- विशाल सशस्त्र बलों का सीधा संबंध राजा के वैभव और शक्ति से था, जो युद्धों के युग में साम्राज्य के रखरखाव और विस्तार के लिये भी आवश्यक था।
- राष्ट्रकूट अपनी सेना में बड़ी संख्या में अरब, पश्चिमी एशिया और मध्य एशिया से आयातित घोड़ों के लिये प्रसिद्ध थे।
- राष्ट्रकूटों की वास्तविक शक्ति उनके कई किलाओं से परिलक्षित होती है जो विशेष सैनिकों और स्वतंत्र कमांडरों द्वारा संरक्षित हैं।
- पैदल सेना में नियमित और अनियमित सैनिक और जागीरदार प्रमुखों द्वारा प्रदान की जाने वाली लेवी शामिल थी।
- नियमित सेना प्रायः वंशानुगत होते थे और कभी-कभी पूरे भारत के विभिन्न क्षेत्रों से लिये जाते थे।
- युद्ध में रथों का कोई संदर्भ नहीं है जो उपयोग से बाहर हो गए थे।

राष्ट्रकूट शासन के दौरान कला और वास्तुकला का विकास:

- राष्ट्रकूटों ने दक्कन की स्थापत्य विरासत में भारी योगदान दिया।
- महाराष्ट्र एलोरा और हाथी के शानदार रॉक-कट गुफा मंदिरों के माध्यम से कला और वास्तुकला में राष्ट्रकूट के योगदान को दर्शाता है।
- छठी शताब्दी में बनी 34 बौद्ध गुफाओं में एलोरा एक है। एलोरा में जैन मुनि भी निवास करते थे।
- बौद्ध गुफाओं के जीर्णोद्धार के अलावा, राष्ट्रकूटों ने रॉक-कट मंदिरों के निर्माण का फैसला किया।
- अमोघवर्ष प्रथम ने जैन धर्म अपनाया, और एलोरा में पांच जैन गुफा मंदिर उनके शासनकाल के थे।
- एलोरा में एकाश्मिक कैलासनाथ मंदिर राष्ट्रकूटों की सबसे शानदार और भव्य रचना है।
- मंदिर की दीवारें रावण, शिव और पार्वती सहित हिंदू पौराणिक कथाओं की शानदार मूर्तियों से सुशोभित हैं।

कैलासनाथ मंदिर:

- कैलासनाथ मंदिर भारत के महाराष्ट्र में एलोरा की गुफाओं में रॉक-कट हिंदू मंदिरों में सबसे बड़ा है।
- दक्कन से दक्षिण भारत में राष्ट्रकूट शासन के विस्तार के बाद, राजा कृष्ण प्रथम ने कैलासनाथ मंदिर परियोजना शुरू की। कर्नाटक द्रविड़ की स्थापत्य शैली को अपनाया गया है।
- मुख्य मंदिर, एक प्रवेश द्वार, नंदी मंडप, और चारों ओर से घेरे हुए प्रांगण के साथ एक प्रांगण मंदिर के चार प्रमुख घटक हैं।
- कैलाश मंदिर अपनी अद्भुत मूर्तियों के साथ वास्तुशिल्प का एक आश्चर्य है। यह मूर्ति भैंस के रूप में राक्षस को देवी दुर्गा द्वारा मारे जाने को प्रदर्शित करती है।
- रावण एक अन्य मूर्ति में शिव के घर कैलाश पर्वत को स्थानांतरित करने का प्रयास कर रहा था। दीवारें भी रामायण के चित्रों से आच्छादित थीं। कैलाश मंदिर पर द्रविड़ का प्रभुत्व अधिक है।

एलफिंटा की गुफाएँ:

- एलफिंटा की गुफाएँ एक द्वीप पर स्थित हैं, जिसे मुंबई के पास श्रीपुरी (इसे पहले श्रीपुरी नाम दिया गया था, लेकिन निवासी इसे घारापुरी कहते थे) के नाम से जाना जाता है।
- इसे बाद में बनाए गए हाथी की बड़ी मूर्ति के नाम पर रखा गया था।
- एलोरा की गुफाओं और एलफिंटा की गुफाओं में कई समानताएँ हैं जो कारीगरों की निरंतरता को प्रदर्शित करती हैं।
- एलफिंटा गुफाओं के प्रवेश द्वार में विशाल द्वार-पालक मूर्तियाँ हैं।
- गर्भगृह के चारों ओर प्राकार को घेरने वाली दीवार पर नटराज, गंगाधर, अर्धनारीश्वर, सोमस्कंद और त्रिमूर्ति की मूर्तियाँ हैं।

नवलिंग मंदिर:

- अमोघवर्ष प्रथम या उनके पुत्र कृष्ण द्वितीय, जो राष्ट्रकूट राजवंश के एक शासक थे, ने नौवीं शताब्दी में नवलिंग मंदिर परिसर का निर्माण किया था।
- कुक्कनूर शहर में यह मंदिर स्थित है। यह भारतीय राज्य कर्नाटक के कोप्पल ज़िले में, इटागी के उत्तर में और गदग के पूर्व में स्थित है।
- दक्षिण भारत में नौ मंदिर समूह द्रविड़ स्थापत्य शैली में बनाए गए थे। इसका नाम, नवलिंग, लिंग की उपस्थिति से पड़ा है, जो हिंदू धर्म में शिव का सामान्य प्रतिनिधित्व करता है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/rashtrakutas